मनोविज्ञान का महत्व

शक्ति माथुर

आधुनिक समय में मनोविज्ञान की उपयोगिता दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है | इसकी महत्ता को नकारा नहीं जा सकता | मनोविज्ञान हमारे जीवन को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है | मनोविज्ञान हमारे जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा है | मनोविज्ञान के अंतर्गत समाज में होने वाली घटनाओं पर चिंतन किया जाता है| जीवन का कोई भी क्षेत्र ऐसा नहीं है, जो मनोज्ञान से अछूता हो | मनोविज्ञान का योगदान स्वास्थ्य और चिकित्सा के क्षेत्र में, परामर्श एवं निर्देशन, शिक्षा, सेवा और नौकरियों के चुनाव में और कैरियर के सम्बन्ध में मनोविज्ञान के योगदान को नकार नहीं सकते | इसके साथ समाज में व्याप्त कुरीतियों जैसे जाती-भेद, दहेज प्रथा, कुपोषण, भूर्ण हत्या, लिंग-भेद आदि को कम करने में मनोविज्ञान ने काफी मदद की है |

Keywords: मनोविज्ञान, मनोविज्ञान के क्षेत्र, परामर्श, निर्देशन।

प्रस्तावना

मनोविज्ञान एक ऐसा विज्ञान है जो क्रमबद्ध रूप से मानव व्यवहार का अध्ययन करता है तथा प्राणी के भीतर की मानसिक प्रक्रियाओं जैसे चिन्तन, भाव आदि को वातावरण की घटनाओं के साथ जोड़कर अध्ययन करता है | आधुनिक युग में जितनी सुविधाएं बढ़ी हैं उतना ज्यादा तनाव बढ़ा है | आज बच्चे से लेकर वृद्धा अवस्था तक सभी तनाव से ग्रसित हैं| बच्चे को पढाई की चिंता और अच्छे अंक प्राप्त करने की चिंता, कुछ और बड़ा होने पर विश्वविद्यालय में प्रवेश की चिन्ता , समय के साथ रोजगार की समस्या, वृद्धा अवस्था में भरण-पोषण की चिन्ता इसलिए व्यक्ति किसी भी अवस्था में तनाव मुक्त नहीं है | इन परेशानियों से मुक्ति के लिए मनोविज्ञान के सकारात्मक पहलु भी हैं |

मनोविज्ञान के योगदान को विभिन्न क्षेत्र में प्रयोग किया जा सकता है:-

1. स्वास्थ्य और चिकित्सा के सम्बन्ध में
2. सामाजिक समस्याएं
3. परामर्श और निर्देशन
4. शिक्षा के क्षेत्र में
5. सेवा और नौकरियों के चुनाव में
6. यौन शिक्षा के सम्बन्ध में
7. खेल के क्षेत्र में
8. अभिभावक को परामर्श
9. कैरियर के सम्बन्ध में परामर्श के और चिकित्सा सम्बन्ध में |

1. स्वास्थ्य और चिकित्सा के क्षेत्र में

स्वास्थ्य और चिकित्सा मनोविज्ञान का महत्वपूर्ण अंग है | स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन का विकास होता है | स्वस्थ शरीर होने से हम जीवन में बहुत कुछ कर सकते हैं | अगर कोई व्यक्ति असामान्य व्यवहार करता है तो मनोविज्ञान में उसकी समस्याओं को समझा जाता है, उसके कारणों का पता लगाया जाता है और इस तरह की अनुकूल परिस्थितियां उत्पन्न की जाती हैं | जिससे उसका निराकरण हो सके | पहले समय में मानसिक रोगियों के लिए झाड़-फूंक, तंत्र-मंत्र विद्या का प्रयोग किया जाता था | लोगों के मन में यह भ्रांतियां थीं कि इन पर भूत-प्रेत का साया है | इन भ्रांतियों को खत्म करने के लिए मनोविज्ञान में चिकित्सक पूर्ण रूप से परामर्श देते हैं कि इसका मुख्य कारण क्या है, उसको जानने का प्रयत्न करना और उससे सम्बंधित दवाई दी जाती है | शारीरिक समस्याओं के समाधान के लिए मनोचिकित्सक कि भी सहायता ली जाती है| मानसिक रोगियों के सम्बन्ध में अभी भी कुछ भ्रांतियां प्रचलित हैं:-

- मानसिक रोगी हिंसात्मक और खतरनाक होते हैं |
- मानसिक रोगी के सम्बन्ध में उनके ख़राब व्यवहार पर यह माना जाता है कि वह है ही ऐसा |

- लोगों के मन में यह भ्रान्ति है कि मानसिक रोगी कभी भी उस बीमारी से उबर नहीं पाते |
- दूसरे लोग सोचते हैं कि जिन मानसिक रोगयिओं को इस बीमारी का अनुभव है वह अपने काम पर नहीं जा सकते और रोजमर्रा की जिन्दगी को आसानी से नहीं जी सकते |
- हर कोई वृद्धा अवस्था में अवसाद (Depression) में जाता है जो की जीवन का हिस्सा है |
- जिनको मानसिक रोग का अनुभव होता है वह कमजोर होते हैं|
- मानसिक रोग मानसिक बीमारी नहीं है।

इन भ्रन्तिओं को समाप्त करने के लिए मनोविज्ञान में चिकित्सक पूर्ण रूप से परामर्श देते हैं इसका मुख्य कारण क्या है? कारणों को जानने का प्रयत्न किया जाता है | रोगयिओं को समझाया जाता है और उससे सम्बन्धित दवाएँ दी जाती हैं | शारीरिक समस्याओं के समाधान के लिए मनोचिकित्सक की भी सहायता ली जाती है |

2. सामाजिक समस्याएं

हमारे देश में रुढ़ीवदी मानसिकता का प्रचलन है जैसे- जाति-भेद दहेज-प्रथा, कुपोषण, भूर्ण हत्या, लिंग-भेद आदि | इन रुढ़ीवदी समस्याओं के समाधन करने और स्वस्थ समाज का निर्माण करने में मनोविज्ञान महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकता है | इस समस्या के समाधान के लिए सर्वेक्षण के आधार पर समाज को शिक्षित किया जा सकता है कि यह सब कुरीतियां हैं, इसका निदान किए बिना समाज को उच्च शिखर पर नहीं पहुँचाया जा सकता| इन समस्यओं को सुलझाने के लिए मनोवैज्ञानिक तरीकों का उपयोग कर सकते हैं |

जाती-भेद

जाति-भेद के आधार पर बहुत लड़ाईयां होती हैं | यह लड़ाईयां उच्च और निम्न जाति को लेकर, रंग भेद के आधार पर और धर्म को लेकर होती हैं | इस सम्बन्ध में मनोवैज्ञानिक दोनों संगठनों को बिठाकर परामर्श प्रदान करता है कि सभी व्यक्ति समान हैं | भगवान् के बनाए हुए बन्दे हैं इनमें आपस में कोई भेद नहीं है |

दहेज-प्रथाहमारे समाज में दहेज प्रथा भी मुख्य समस्या है | जो लोग अन्धविश्वास से ग्रसित हैं | वह दहेज को लेकर लड़की को प्रताड़ित करते हैं | लोगों के मन में यह भावना है कि हमने लड़के को बड़ा करने और पढाई-लिखाई में खर्चा किया है तो वह लड़की वालों से वसूल करना चाहिए | आजकल लड़की को पढ़ाने-लिखाने में उतना ही खर्च होता है | मनोविज्ञान में इस समस्या के समाधान के लिए समाज को शिक्षित किया जाता है कि दहेज़ लेना एक बुराई है | यह हमारे को थोड़े समय का सुख दे देगा फिर हमारी जिन्दगी वैसी ही हो जाएगी| सलाह के आधार पर इससे निदान पाया जा सकता है |

कुपोषण

देश की काफी जनसँख्या अनपढ़ होने के कारण और गरीबी रेखा से नीचे होने के कारण कुपोषण का शिकार होते हैं | लोगों के पास खाने के लिए इतना पैसा नहीं हैं कि वह अपने बच्चों को खिला सकें | गरीबों के बच्चे भी काफी होते हैं | वह सोचते हैं कि थोड़ा बड़े होने पर कमाने लायक हो जाएगें | ऐसे में सलाहकार (counselor) कि मदद ली जाती है | सलाहकार खाने की महत्वता को बताते हैं और किस भोजन में कितनें पौष्टिक तत्व विद्यमान हैं जो हमारे शरीर के लिए जरुरी हैं |

भ्रूणहत्या

हमारे समाज की विडम्बना यह है कि लड़कियो को अभी भी बोझ समझा जाता है | लड़के को घर का कर्ता धरता और वंश चलाने वाला समझा जाता है | इसलिए लड़की को पैदा होने से पहले ही मार दिया जाता है जो कि हमारे समाज में बहुत बड़ी कुरीति है | इस क्षेत्र में मनोविज्ञान का महत्वपूर्ण योगदान है | इस क्षेत्र में विशेष शिक्षाविद्, सलाहकार होते हैं और विभिन्न प्रकार की मनोवैज्ञानिक पद्धतियों का प्रयोग करके समझाया जाता है |

लिंग भेद

लड़के और लड़कियों में भेद किया जाता है | लड़के को पढ़ाया लिखाया जाता है कि आगे चलकर घर चलाएगा लेकिन इसके विपरीत लड़कियों की पढाई को बीच में छुड़ा दिया जाता है और उसे घर के कामों में लगा दिया जाता है क्योंकि उसे दूसरे के घर जाना है| लड़के को संतुलित आहार दिया जाता है जिससे वह घर का पालन-पोषण करेगा और वंश चलाएगा | लड़की के खाने-पीने पर ध्यान नहीं दिया जाता | मनोविज्ञान के आधार पर उनको सलाह दी जाएगी कि लड़के और लड़की बराबर हैं | लड़की पर भी उतना ही

ध्यान देना चाहिए जितना लड़कों पर क्योंकि वह दो परिवारों को जोड़ती है एवम् भविष्य की निर्माता है | लड़की को पौष्टिक आहार की ज्यादा आवश्यकता है |

3. परामर्श तथा निर्देशन

वर्तमान समय व्यक्ति के लिए चुनौतीपूर्ण है | हर एक क्षेत्र में प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ता है | बेरोज़गारी की समस्या इतनी ज्यादा है कि बेरोजगारों में संघर्ष व् तनाव व्याप्त है | कई बार व्यवसाय का चुनाव सही नहीँ होता, जिससे वह असफल हो जाते हैं | ऐसे में मनोवैज्ञानिक परीक्षणों की सहायता से परामर्शदाता एवम् मनोवैज्ञानिक उपयुक्त व्यवसाय का चुनाव करने में सहायता करते हैं | इस तरह से मनोविज्ञान उचित व्यवसाय का चयन करने में मदद करता है | व्यवसाय में आने वाली समस्याओं का समाधान मनोवैज्ञानिक तरीके से किया जाता है | जैसे-जैसे नई तकनीक का प्रयोग बढ़ा और उसके साथ ही दोनों माता-पिता का नौकरी में जाना और बच्चों को ज्यादा समय न दे पाना, इस कारण से कई बार बच्चे गलत संगत में पड़ जाते हैं | उस समय सलाहकर (counsellor), मनोवैज्ञानिक, मनोचिकित्सक बच्चों को गलत संगत से उबारने के लिए परामर्श और निर्देशन देते हैं कि हम अच्छे लोगों के सम्पर्क में आए, ज्ञानवर्धक पुस्तकें पढ़ें, अपनी रुचि के अनुसार काम करें तो इस सम्बन्ध में मनोविज्ञान काफी सहायता कर सकता है |

4. शिक्षा के क्षेत्र में

शिक्षा के क्षेत्र में मनोविज्ञान ने क्रांति ला दी है | मनोविज्ञान काफी विद्यालय और महाविद्यालय में मुख्य विषय के रूप में पाठ्यक्रम में शामिल किया गया है | शिक्षा के क्षेत्र से सम्बंधित समस्याओं को देखते हुए मनोविज्ञान में अनेक शोध और खोज की जा रही हैं | पाठ्यक्रम को बच्चों की रुचि के अनुसार बनाने की चेष्टा की जा रही है | जिससे बच्चों को विषय वस्तु का चयन करने में असानी रहे और उनका सर्वागीण विकास हो सके | इस क्षेत्र में बच्चों की मानसिक परीक्षा लेकर उनके अध्ययन के विषयों के बारे में उचित निर्णय ले सकते हैं कि बालक को क्या पढ़ायें, कैसे पढ़ाएं आदि के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं | मनोवैज्ञानिक शोधों के आधार पर पाठ्यक्रम में सुधार एवं विभिन्न कार्यों को सुनिश्चित कर सकते हैं जैसे -शिक्षक-विद्यार्थी में सम्बन्ध स्थापित करना,सलाहकार (counsellor) की मदद से बच्चों को नई दिशा का ज्ञान देना |

5. सेवाओं और नौकरियों के क्षेत्र में

मनोवैज्ञानिक द्वारा परामर्श और निर्देशन दिया जाता है | जिनके आधार पर छात्रों की योग्यता , कार्यक्षमता, अभिरुचि और बौद्धिक क्षमता का पता लगाकर उचित रोजगार की सलाह दी जाती है | आज के आधुनिक समाज में सभी प्रकार की नौकरियों के चुनाव में मनोवैज्ञानिक परीक्षण का प्रयोग किया जाता है | लोकसेवा आयोग, संस्थाओं, सरकारी और गैर सरकारी संस्थाओं (Non Govt. Organization), जल, थल और वायु सेनाओं में भी इन्हीं योग्यता परीक्षाओं के द्वारा उचित व्यक्ति का चुनाव किया जाता है | सेना में भर्ती के लिए Army Alpha Test का प्रयोग अधिकारियों के चुनाव के लिए किया जाता है | Army Beta Test का प्रयोग सामान्य सैनिकों के चुनाव के लिए किया जाता है | नई-नई तकनीकों के उपयोग के साथ ही मनोविज्ञान का महत्व भी बढ़ रहा है |

6. यौन शिक्षा के क्षेत्र में:-

वर्तमान समय में यौन शिक्षा का महत्व बढ़ गया है | पाश्चात्य सभ्यता प्रदुर्भाव टी.वी., मीडिया, कंप्यूटर यह सभी माध्यम बढ़ा चढ़ा कर प्रचार करते हैं | जिस कारण से बच्चों के कोमल मन पर इसका अत्यधिक प्रभाव पड़ता है| यौन स्वच्छंदता के कारण बच्चों में विकृतियाँ बढ़ने के अवसर ज्यादा रहते हैं | आए दिन बलात्कार, यौन विकृतियाँ के समाचार पढ़ने और सुनने को मिलते हैं, जिससे समाज पर बुरा असर पड़ता है | दूसरी ओर इन विकृतियों के बढ़ने पर व्यक्ति अपराधिक भावनाओं के ओर अग्रसर होता है | यौन समस्याओं के समाधान के लिए मनोविज्ञान एक महतवपूर्ण भूमिका निभाता है |

मनोविज्ञान यौन विकृतियों में सुधार लाने और ठीक करने के लिए उपाय सुझाती है | मनोचिकित्सक समस्या का विश्लेषण करके उस समस्या का समाधान करने का प्रयत्न करता है | व्यक्ति को यौन शिक्षा द्वारा यौन का सही अर्थ समझाया जाता है और यौन समस्याओं का समाधान किया जाता है |

7.खेल क्षेत्र में

खेल जगत में मनोविज्ञान का पर्याप्त योगदान है | खेल क्षेत्र में खिलाड़ियों के मानसिक स्तर को बनाए रखने के लिए मनोविज्ञान महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है| उपयुक्त खिलाड़ियों के चयन के लिए भी मनोवैज्ञानिक परीक्षण किया जाता है | प्रतिस्पर्धा के युग में खिलाड़ियों का मनोबल और उत्साह बढ़ाने के लिए, खिलाड़ियों में खेल भावना (sportsmanship)को निखारने के लिए मनोविज्ञान से काफी मदद मिलती है | खेल प्रतियोगिताओं के समय प्रतियोगिता के दबाव के कारण चिन्ताएँ और कुंठाएँ जन्म ले सकती हैं | ऐसी स्थिति में मनोवैज्ञानिक उनकी समस्याओं का समाधान कर उचित परामर्श देता है जिससे उनका मनोबल बना रहे | खिलाड़ियों को नए तौर-तरीकों (technique) से अवगत कराया जाता है और मनोवैज्ञानिक ढ़ंग से प्रशिक्षण दिया जाता है |

8. अभिभावक को परामर्श

आजकल ज्यादातर माता-पिता दोनों ही नौकरी पर जाते हैं | जिसके कारण वह बच्चों पर ध्यान नहीं दे पाते | जिससे बच्चे गलत संगत में पड़ जाते हैं | ऐसे समय में मनोविज्ञान एक वरदान के रूप में साबित हो रहा है | ऐसी स्थिति में माता-पिता को सलाह दी जाती है कि वह बच्चों के लिए अधिक से अधिक समय निकालें, उनके साथ खेलें, उनको बाहर घुमाने ले जाएँ, शिक्षाप्रद कहानियाँ सुनाएँ, बच्चों की दोस्ती कैसे बच्चों के साथ है उसकी जानकारी रखें और उन बच्चों का परिवारिक परिवेश कैसा है ? माता-पिता को मनोवैज्ञानिक परामर्श दें की बच्चे माता-पिता की सलाह मानें |

प्रतिस्पर्धा के युग में हर माता-पिता चाहतें हैं कि उनका बच्चा सब बच्चों में श्रेष्ठ हो | कई बार दूसरे बच्चों से उनकी तुलना करतें हैं| तुलना करना ठीक नहीँ है | बच्चों की रूचि के अनुसार विषय वस्तु का चुनाव करें | इस संबध में मनोवैज्ञानिक तकनीक बताई जाती है कि किस तरह से बच्चों से व्यवहार करना चाहिए |

9. कैरियर के समबन्ध में परामर्श

कैरियर के सम्बन्ध में मनोचिकित्सक, परामर्शदाता , अध्यापक, सलाहकार बन सकते हैं और सही मार्ग चुनने में मदद कर सकते है | मनोविज्ञान की कई शाखाएं हैं | आप अपनी रूचि के अनुसार उनका चुनाव कर सकते हैं | कुछ शाखाएं निम्नलिखित हैं -

संज्ञानात्मक मनोविज्ञान

संज्ञानात्मक मनोविज्ञान का सम्बन्ध उस अनुभूति से है, जिसके द्वारा मनुष्य के मस्तिष्क में किसी समस्या के समाधान की क्षमता से है | इस शाखा के अंतर्गत यह कोशिश की जाती है कि सोचने की प्रक्रिया, विचारों का विकास और याद रखने की आदत को समझा जाए | इस शाखा के अंतर्गत और भी शाखाएं हैं जैसे- शिक्षण, सामाजिक और उद्योग्यिक मनोविज्ञान आदि |

विकासमूलक मनोविज्ञान (Developmental Psychology)

जैसे-जैसे हम बड़े होते हैं, हमारे सोचने के विचारों और देखने के नजरिये में परिवर्तन होता है | विकासमूलक मनोविज्ञान में शैशवकाल से लेकर बड़े होने तक और वृद्ध अवस्था में क्या परिवर्तन होते हैं, उसको देखना | इन बदलाव का क्या परिणाम होता है | इसके अंतर्गत सूक्ष्म मुद्दों और दीर्घ मुद्दों का भी अध्ययन किया जाता है |

शिक्षण मनोविज्ञान

शिक्षण मनोविज्ञान के अंतर्गत वैज्ञानिक तरीके से व्यक्तियों का अध्ययन किया जाता है कि शिक्षा के क्षेत्र में किस तरह से सोचता है और शिक्षण को व्यवहार में लाता है | जब वह शिक्षा ग्रहण करता है तो सोचता है किस तरह से प्रेरणा (Motivation), बुद्धिमता (Intelligence) और आत्म संप्रत्यय (Self-Concept) एक-दूसरे से भिन्न हैं| इस शाखा के अंतर्गत इस बात का अध्ययन करना जरुरी है कि बच्चों और बड़ों के सीखने में सैधांतिक और व्यवहारिक पहलु हैं| इसमें उन मुद्दों को भी देखा जाता है, जिसमें सीखने में होने वाले विकार उत्पन्न होते हैं | इस शाखा के अंतर्गत आंकलन विधि का भी प्रयोग करते हैं, कक्षा में इस तरह का प्रबंधन किया जाए कि सीखने का उचित परिणाम निकल सके |

संगठन/ औद्योगिक मनोविज्ञान

संगठन और उद्योग में व्यक्ति किसी भी उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए साथ काम करते हैं | यह इस बात पर निर्भर करता है कि उनमें किसी काम को करने में कितना उत्साह और योग्यता है | कार्य करने की क्षमता वहां के वातावरण पर निर्भर करता है और इस तरह का वातावरण बनाया जाए कि उनकी कार्य के प्रति रूचि उत्पन्न हो और नौकरी से संतुष्ट हों |

नैदानिक मनोविज्ञान (Clinical Psychology):-

नैदानिक मनोविज्ञान एक महत्वपूर्ण शाखा है जिसमें मनोवैज्ञानिक विशेषज्ञ उन मुद्दों को समझने का प्रयत्न करता है जो व्यक्तियों को परेशान करते हैं और चिंता में डालते हैं | विशेषज्ञ ही उसे समझ सकते हैं की व्यक्ति को किस प्रकार से बचाया जाए और राहत प्रदान की जाए | नैदानिक मनोविज्ञान में जिन बच्चों को पढ़ने–लिखने में परेशानी होती है उसे Dyslexia कहते हैं | उन बच्चों के लिए Visual Motor Gestalt Test और Dyslexia Screening Test का प्रयोग किया जाता है | जिसके द्वारा यह पता लगाया जा सकता है कि बच्चे को पढ़ने-लिखनें दोनों में ही परेशानी है या केवल लिखने (Disgraphia) में ही है | हिसाब से सम्बन्धित परेशानी को Discalculia कहते है | इसके द्वारा पता लगाया जा सकता है कि बच्चे को किस तरह की परेशानी है फिर उसी के अनुसार कमियों पर ध्यान दिया जाता है | नैदानिक मनोविज्ञान में मनोचिकत्सा का महत्वपूर्ण योगदान है | मनोवैज्ञानिक

समाजिक मनोविज्ञान

सामाजिक मनोविज्ञान में उन तत्वों का अध्ययन किया जाता है, जिसमे कोई व्यक्ति दूसरे लोगों की उपस्थिति में और समाजिक वातावरण में किस तरह का व्यवहार करता है | मनोविज्ञान भावना ,विचार और व्यवहार को भी परखता है| यह शाखा समाजिक प्रभाव, समूह और पारस्पारिक प्रक्रिया के पहलुओं का अध्ययन करता है जैसे - क्रोध, पक्षपात आदि |

खेल मनोविज्ञान

खेल मनोविज्ञान की शाखा का कुछ दशकों से विकास हुआ है | यह एक अंत: विषय क्षेत्र (Interdisciplinary field) है, जो शरीर क्रिया विज्ञान (Physiology), जैव यांत्रिक (Bio-mechanic) और मनोवैज्ञानिक तत्वों को एक साथ लाता है | हम सभी जानते हैं कि केवल शारीरिक ताकत ही खिलाड़ियों के लिए काफी नहीं है, जब तक कि यह मानसिकता पैदा न हो कि हमें अच्छा प्रदर्शन करना है | मानसिक लचीलापन का विकास खेल में जरुरी है | कई बार खिलाड़ियों के साथ खेल मनोवैज्ञानिक भी होते हैं |

मनोविज्ञान से सम्बन्ध रखने वाले विद्यार्थी शिक्षा संस्थाओं, विद्यालय, विश्वविद्यालय, प्रबंधन और इंजीनियरिंग संस्थाओं में नौकरी के अवसर मिल सकते हैं | इसके अलावा स्वास्थ्य क्लीनिक, अस्पताल ग़ैर सरकारी संस्थानों (Non- Governmental organisation), विज्ञापन संस्थाओं, पुनर्वास केंद्र, HR Consultancies, आपदा प्रबंधन संस्थानों में कार्य कर सकते हैं |

मनोविज्ञान के कैरियर में सफलता प्राप्त करने के लिए उत्सुक परिवेक्षक (Keen Observer), लोगों को मदद करने की इच्छा, मजबूत संप्रेषण की योग्यता (Strong Communication Skill), विश्लेषणात्मक योग्यता (Analytical Ability), सहनशीलता और दूसरों के प्रति द्रढ़ता की योग्यता का होना आवश्यक है| इसके साथ ही सहानुभूतिपूर्ण और नैतिक दृष्टिकोण हो | इन सब योग्यता का विकास सकारात्मक सोच और ईमानदारी से की गई कोशिश से विकसित हो सकता है |

अंत में मनोविज्ञान के महत्व को नकारा नहीं जा सकता | मनोविज्ञान का हर प्रयोग हर क्षेत्र में किया जाने लगा है | मनोविज्ञान के अंतर्गत काउंसलर आते हैं | जिनकी आवश्यकता दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है जैसे- शिक्षा संस्थानों में, नौकरियों में, कार्यालयों में, रोगियों और डिप्रेशन से पीड़ित व्यक्तिओं के लिए, अस्पतालों में, अपराधियों को सुधारने में काउंसलर काफी मददगार सिद्ध हो रहे हैं | इस तरह से मनोविज्ञान की लोकप्रियता दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है |